International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-01-2023, Accepted: 07-02-2023, Published: 25-02-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 44-45

गढ़वाल हिमालयी लोकजीवन में प्रकृति पूजा के लोकगीत

डॉ. डी. एस. भण्डारी
विभागाध्यक्ष हिन्दी, बालगंगा महाविद्यालय सेन्दुल, केमर टिहरी गढवाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
गढ़वाल हिमालय का यह क्षेत्र धार्मिक भावना प्रधान क्षेत्र है। यहां के धार्मिक विश्वास हिंदू धर्म के विश्वासों के समान ही हैं। धर्म ग्रंथों में वर्णित धर्म के अतिरिक्त यहां लोक में एक पृथक धर्म का अस्तित्व दिखाई देता है। यहां शास्त्र सम्यक धर्म और लोग धर्म की परंपराएं समान रूप से अपना अस्तित्व बनाए हुए दिखाई देती हैं एक ओर धार्मिक और शास्त्रीय पद्धति के अनुसार जीवन पद्धति को अंगीकार किया जाता है, दूसरी ओर लोक कि पृथक प्रवृत्तियों का अनुसरण भी किया जाता है। मनुष्य ने जीवन जगत को अपने ढंग से समझने का प्रयत्न किया और उसके रहस्यों की व्याख्या की। यहां धार्मिक विश्वासों प्राकृतिक रहस्यों, पारलौकिक तत्वों संबंधी लोक भावना को व्यक्त करने वाले अनेक गीत मिलते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन लोकगीतों की विवेचना की गई है।

मूल शब्दः गढ़वाल, प्रकृति पूजा, लोकगीत

हिंदू धर्म ग्रंथों में सूर्य, चंद्र, अग्नि आदि प्राकृतिक शक्तियों की पूजा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। सूर्य चंद्र अग्नि को प्रत्यक्ष देवता की संज्ञा दी जाती है। भारतीय धर्म संस्कृति में अत्यधिक आदर सम्मान प्राप्त है। भारतीय धर्म संस्कृति के समान ही यहां भी अनेक अनुष्ठानों के समय इनका पूजन अर्चना किया जाता है और इनसे संबंधी अनेक लोकगीत यहां प्रचलित हैं।

ऐ जा अगनि मेरा मात लोक, मेरा मात लोक,
त्वै बिना अगिन, ब्रहमा भूखो रैगे।
कसु औलू कसू औलू तेरा मात लोक।
तेरा मात लोक बुरो अत्याचार।
कसु कै औलो तेरा मात लोक।

अग्नि को आमंत्रित वैदिक परंपरा में भी किया जाता है कल्याण की कामना के लिए अग्नि को आमंत्रित किए जाने का उल्लेख ऋग्वेद में कई स्थानों पर किया गया है। ह्यपाम्यग्नि प्रथमं स्वस्तयें।[1]
इस लोकगीत में अग्नि धरती पर आने के लिए संकेत करती हैं, लेकिन लोकमानस में यह धारणा है कि अग्नि पाप हन्ता है, इसलिए उसका आह्वान किया जाता है। लोकजीवन में अग्नि के प्रति अत्यधिक आदर भाव प्रकट किया जाता है। अनेक धार्मिक अनुष्ठानों ,विवाह के अवसर पर अग्नि सम्बन्धी लोकगीत गाए जाते हैं, अग्नि को प्रदीप्त किये कोई भी धार्मिक अनुष्ठान संपन्न नहीं हो सकता है अतः उसे देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। कई वेद सूत्रों में भी लोक कल्याण के लिए अग्नि को स्वर्ग से धरती पर आहूत किया गया है। अते वत्सो ममोययत पदम चित्स घस्यात अग्नेय त्वां कामयागिरी।[2]
अग्नि के समान नदियों के प्रति पूजन व सम्मान की भावना यहां प्राचीन काल से ही देखी जाती है यहां कई स्थानों पर अन्य देवी–देवताओं के समान गंगा यमुना के मंदिर बने हुए हैं। गंगा यमुना का महत्व अनेक रूपों में वर्णित हुआ है। कई लोकगीतों में उसे लक्ष्मी और ऐश्वर्यदात्री जननी के रूप में चर्चित किया जाता है।

गंगा माई गाडू रींग्या ओद।
गंगा माई इनी मातमी माई।
गंगा माई त्वैन उत्पैइ लिने,
गंगा माई हिमालै का गोद।
गंगा माई अखोडू की साई।
गंगा माई सोना की जटा।
गंगा माई मोत्यों भरीं ले बाहीं।

यहां जलतीर्थों के प्रति अत्यधिक आदर भाव दिखाई देता है। यहां गंगोत्री और यमुनोत्री विश्व प्रसिद्ध जल तीर्थ हैं, जो कि गंगा और यमुना के उद्गम स्थलों पर बने हैं यहां पर पय शब्द का उपयोग जल और दूध दोनों के लिए किया जाता है, यहां नदियों को माता का संबोधन किया जाता है अनेक शुभवसरों पर नदी के किनारे मेले लगते हैं वेदों में भी जल को आपो देवता कहा गया है। 'प्रथमे जलं सूनाकांर नहिं धरती का आकासं निराकार ते भयो साकार' इसके अतिरिक्त जल को विष्णु स्वरूप भी माना जाता है। देवत्व के आरोपण वाले ऐसे अनेक लोकगीत यहां लोक कंठ में सुरक्षित हैं।[3]
अग्नि और नदी के समान ही पर्वतशिखरों के प्रति भी यहां लोकमानस में अत्यधिक आदर और पवित्रता का भाव देखा जाता है ऐसे भाव वैदिक काल से ही व्याप्त हैं डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल कहते हैं कि गिरिराज को धारण करते समय कृष्ण कहते हैं कि गिरी और वन हमारे देवता हैं पर्वतों के प्रति देवत्व के भाव के कारण ही पर्वत चोटियों पर झण्डियां चढाई जाती हैं।[4]
डॉक्टर चातक कहते हैं कि आज भी गढ़वाल में पर्वत शिखर पर पहुंचकर हरी टहनी फूल और पत्थर चढाए जाते हैं, यहां लोक विश्वास है कि पर्वत शिखरों पर फतुडू देवता का आवास होता है शिव पार्वती का संबंध हिमालय से होने के कारण भी पर्वतों के देवता का आरोपण किया जाना स्वाभाविक है। बौद्ध परंपरा में भी स्तूपों पर भेंट चढ़ाई जाती है। फल फूलों का प्रतिरूप मानकर मठ में किसी पेड़ पर बांध दिए जाते थे।
नदियां और पर्वतों की भांति वृक्षों फूलों वनस्पतियों तथा पशु पक्षियों के प्रति भी देवत्व और अपनत्व का भाव दिखाई देता है। यहां के लोकगीतों में फूलों के प्रति अत्यधिक पवित्रता के भाव व्यक्त किए गए हैं रायमासी ब्रह्मकमल, फ्यूंली, बुरांस, कूंजा आदि फूल लोकगीतों के मुख्य विषय हैं। प्रकृति के उपादानों से यहां के जनमानस द्वारा एक सूत्रता स्थापित करने का प्रयास किया जाता है, यहां लोकमानस में ऐसी धारणा भी है कि एक जन्म की किशोरी दूसरे जन्म में फूल के रूप में जन्म लेती है फ्यूली का फूल एक सुंदर उदाहरण है फूलों का सम्मान देने के लिए

फूलदेई का त्यौहार मनाया जाता है किशोरियां फूल लाकर सूर्योदय से पहले देहलियों पर चढ़ाते हैं।[5]

फूलदेई छिमा देई,
दैणी द्वारा भर भंकार।
फूलदेइ फूल संकरांद,
सुफल भयो नयो बरस तुमकू भगवान।
तुम्हारा भकार भरयान अन्न छन्न मूल्यान।

फूलों जैसा भाव पेडों के लिए भी दिखाई देता है यहां एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है जिसमें कहा गया है कि 'परायो डालो अर आपणो बालो' अर्थात कि चाहे उसे पराया ही क्यों ना हो अपने पुत्र के बराबर है पैयां बड, पीपल, कुश, विल्व, आम, तुलसी आदि वृक्षों को देवताओं से सम्बद्ध किया गया है और इनके प्रति आदर भाव लोकमानस में व्याप्त है नया पद्म वृक्ष उग आने पर लोग में हर्ष छा जाता है और सहज भाव से ही लोककंठ से स्वर फूट पड़ते हैं।[6]

नई डाली पैंया जामी देवतों की डाली।
हेरी लेवा देखी नई डाली पैंयां जामी।
नई डाली पैंया जामी, कूली का विडवाल।
नई डाली पैंया जामी, सेरा का डिस्वाल।
नई डाली पैंया जामी, क्वीचौंरी चिण्याला।
नई डाली पैंया जामी, क्वी दूध चरियाला।
नई डाली पैंया जामी, घु करा धूपाणो।

यहां संपन्न होने वाले अनेक त्योहारों के अवसर पर पेड़ पौधों के प्रति आत्मीयता के भाव प्रकट होते दिखाई देते हैं अयांर कुटु हरियाली नवरात्र तथा नागपंचमी आदि अवसरों पर जौ को बहुत महत्व दिया जाता है।[7]

जौ ल्यौ पंचनाम देवता जौ ल्यौ पंचमी साल ।
जौ ल्यौ हरिराम शिव जौ ल्यौ मोरी का नारैण।

नवरात्रि के अवसर पर देवी की पूजा में देव मंदिरों और घरों में जो की हरियाली उगाई जाती है और उसे प्रसाद स्वरूप बांटा जाता है हल्दी की बाड़ी के प्रति भी आदर भाव देखे जाते हैं।

आज न्यूतीपाले मैना हल्दानु बाडी,
आज चयान हल्दानु को काज।

पशु पक्षी के प्रति भी इसी प्रकार के आत्मीय भाव लोकमानस में देखे जाते हैं कागा को शगुन देने के लिए बुलाया जाता है।

आवा कागा बैठा कागा हरियां वृक्ष,
बोल कागा बोल कागा चौदिसो सगुन।
त्वै घुलो कागा में दूध भाति पूरी,
बोल कागा बोल कागा चौदिसो सगुन।
कफ्फू के प्रति अत्यधिक आत्मीयता दिखाई देती हैं।
कफ्फू बासलो मेरा मैत्यों को मैती।
कफ्फू बासलो मेरा मैत्यों को मैती।
कफ्फू बासलो नई रितु बौडली।
कफ्फू बासलो मेरी त्वई सुणली।
मेरा मैत का देश बाज घुघुती।
बोई सुणली आंसू ढोलली।
बाबा सुणला सासू मनालो,
नन्द सुणली ताणा मारली।

निष्कर्ष

गढ़वाल हिमालय लोक जीवन में आदिम मानव ने जीवन को अपनी दृष्टि से देखा और उसे अपनी कल्पना से अनुरंजीत किया। उसकी दृष्टि संकुचित ही क्यों ना रही हो लेकिन उसने जीवन और जगत को समझने का प्रयत्न किया। यहां प्राचीन काल से ही धार्मिक भावनाएं बलवती रही हैं। यही कारण है कि शताब्दियों से धर्म के साथ साहित्य संगीत नृत्य आदि का घनिष्ठ संबंध यहां देखा जाता है। आदिम मानव के धार्मिक और प्राकृतिक विश्वास धार्मिक बाधाओं उसके रहस्य और अदृश्य शक्ति के अज्ञान ग्रस्त कौतुहल से संबंधित रहे हैं इसलिए उनमें पारलौकिक तत्व महत्वपूर्ण दिखाई देता है आदिमानव में वस्तुओं वनस्पतियों और जीवो में पारलौकिक शक्ति के दर्शन ही नहीं किए वरन उनमे जड़ और चेतन को ही अपनी अंतर जगत की भावना से एक भी व्यक्तित्व प्रदान किया।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद – 1.3
2. ऋग्वेद – 8 : 11: 7
3. डॉ0 शिवप्रसाद डबराल ढोल सागर संग्रह पृष्ठ – 110
4. डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन पृष्ठ – 56
5. गढवाली लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली 2003 पृ0 – 54
6. गढवाली लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली 2003 पृ0 – 54
7. डॉ0 गोविन्द चातक गढवाली लोकगीत विविधा तक्षशिला प्रकाशन – 2001 पृ0 – 34